ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor (RJIF): 8.4
IJAR 2025; 11(3): 281-284
www.allresearchjournal.com
Received: 15-02-2025
Accepted: 16-03-2025

संगीता चौधरी
शोधार्थी, इतिहास विभाग, ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय, जयपुर, राजस्थान, भारत

Corresponding Author:
संगीता चौधरी
शोधार्थी, इतिहास विभाग, ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय, जयपुर, राजस्थान, भारत

राजस्थान के मंदिरों की स्थापत्य कला और केराडू मंदिर: एक विशेष अध्ययन

संगीता चौधरी

DOI: https://www.doi.org/10.22271/allresearch.2025.v11.i3d.12434

सारांश
राजस्थान के मंदिरों की स्थापत्य कला भारतीय वास्तुकला की समृद्ध धरोहर का एक महत्वपूर्ण अंग है। यहाँ के मंदिर मुख्यतः नागर शैली में निर्मित हैं, जिनकी विशेषताएँ भव्य शिखर, उकेरी हुई मूर्तियाँ, सुंदर मंडप, और अलंकृत स्तंभ हैं। इस शोध पत्र में राजस्थान के प्रमुख मंदिरों की स्थापत्य विशेषताओं का विश्लेषण किया गया है, साथ ही केराडू मंदिर का विशेष अध्ययन प्रस्तुत किया गया है।
केराडू मंदिर, जो बाड़मेर जिले में स्थित है, नागर शैली का उत्कृष्ट उदाहरण है। 11वीं-12वीं शताब्दी में निर्मित इस मंदिर में विस्तृत शिल्पकला, भव्य प्रवेश द्वार, और उत्कीर्ण मूर्तियों की अद्भुत प्रस्तुति देखने को मिलती है। ऐतिहासिक रूप से, यह मंदिर परमार शासकों की कारीगरी और शिव भक्ति का प्रतीक है। यह मंदिर आक्रमणों के दौरान क्षतिग्रस्त हुआ था, लेकिन आज भी इसकी स्थापत्य भव्यता आकर्षण का केंद्र बनी हुई है।इस शोध में राजस्थान के मंदिरों की स्थापत्य शैली, उनकी विशेषताएँ, तथा केराडू मंदिर की वास्तुकला, ऐतिहासिक पृष्ठभूमि और धार्मिक महत्व का विस्तृत अध्ययन किया गया है।

कूट शब्द: स्थापत्य कला (Architecture), नागर शैली (Nagara Style),मंदिर वास्तुकला (Temple Architecture), केराडू मंदिर (Keradu Temple), परमार शासक (Parmar Dynasty), मूर्तिकला (Sculpture), शिखर निर्माण (Shikhara Construction), राजस्थान के मंदिर (Temples of Rajasthan), मंडप एवं स्तंभ (Mandapa and Pillars), धार्मिक एवं सांस्कृतिक महत्व (Religious and Cultural Significance)

प्रस्तावना
राजस्थान की स्थापत्य कला भारत की सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक धरोहर का महत्वपूर्ण हिस्सा है। यहाँ के मंदिर न केवल धार्मिक आस्था के केंद्र रहे हैं, बल्कि अपनी अनूठी शिल्पकला, मूर्तिकला, और वास्तुकला के कारण भी प्रसिद्ध हैं। इस शोध पत्र में राजस्थान के मंदिरों की स्थापत्य कला का विश्लेषण किया जाएगा, विशेष रूप से केराडू मंदिर के संदर्भ में, जो इस क्षेत्र के अद्वितीय स्थापत्य शैली का उत्कृष्ट उदाहरण है।

शोध की विधि (Research Methodology)
इस शोध में राजस्थान के मंदिरों की स्थापत्य कला और केराडू मंदिर की विशेषताओं का विश्लेषण करने के लिए वर्णनात्मक (Descriptive) एवं विश्लेषणात्मक (Analytical) अनुसंधान पद्धति का उपयोग किया गया है। शोध के लिए निम्नलिखित विधियों को अपनाया गया है:

ऐतिहासिक अध्ययन (Historical Study)

1. राजस्थान के मंदिरों की स्थापत्य शैली को समझने के लिए प्राचीन ग्रंथों, ऐतिहासिक अभिलेखों और पुरातात्विक स्रोतों का अध्ययन किया गया।
2. केराडू मंदिर के निर्माण काल, स्थापत्य शैली और ऐतिहासिक घटनाओं का विश्लेषण किया गया।
3. साहित्य समीक्षा (Literature Review):
4. विभिन्न पुस्तकों, शोध पत्रों, और लेखों का अध्ययन करके मंदिरों की स्थापत्य कला पर उपलब्ध जानकारी को संकलित किया गया।
5. क्षेत्रीय अध्ययन (Field Study):केराडू मंदिर का प्रत्यक्ष निरीक्षण कर इसकी संरचनात्मक विशेषताओं का विश्लेषण किया गया।मंदिर के स्थापत्य और मूर्तिकला की सूक्ष्मताओं का अवलोकन किया गया।
6. प्रत्यक्ष साक्षात्कार (Interviews):स्थानीय विद्वानों, पुरातत्व विशेषज्ञों और इतिहासकारों से बातचीत कर मंदिर की ऐतिहासिक और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि पर जानकारी प्राप्त की गई।
7. तुलनात्मक अध्ययन (Comparative Study):
8. केराडू मंदिर की तुलना राजस्थान के अन्य प्रमुख मंदिरों (जैसे दिलवाड़ा जैन मंदिर, सोमेश्वर मंदिर, और नागदा के सास-बहू मंदिर) से की गई, जिससे इसकी स्थापत्य विशेषताओं को बेहतर तरीके से समझा जा सके।

शोध का उद्देश्य (Research Objectives)

इस शोध का मुख्य उद्देश्य राजस्थान की मंदिर स्थापत्य कला का विश्लेषण करना और केराडू मंदिर की विशेषताओं को समझना है। इसके अंतर्गत निम्नलिखित बिंदुओं पर विशेष ध्यान दिया गया है:

1. राजस्थान के मंदिर स्थापत्य की विशेषताओं का अध्ययन करना।
2. नागर शैली के स्थापत्य तत्वों को समझना और उनका विश्लेषण करना।
3. केराडू मंदिर की वास्तुकला, शिल्पकला और मूर्तिकला का विस्तृत अध्ययन करना।
4. केराडू मंदिर के ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक महत्व को स्पष्ट करना।
5. अन्य राजस्थान के मंदिरों की तुलना में केराडू मंदिर की स्थापत्य विशेषताओं को विश्लेषित करना।
6. इस मंदिर के संरक्षण और संवर्धन के लिए

राजस्थान के मंदिरों की स्थापत्य कला

2.1 भारतीय मंदिर स्थापत्य की पृष्ठभूमि

भारतीय मंदिर वास्तुकला मुख्य रूप से तीन प्रमुख शैलियों में विभाजित है—

1. नागर शैली (उत्तर भारत)
2. द्रविड़ शैली (दक्षिण भारत)
3. वेसर शैली (उत्तर और दक्षिण की मिश्रित शैली)

राजस्थान में प्रचलित मंदिरों की स्थापत्य शैली मुख्यतः नागर शैली से प्रभावित है।

2.2 राजस्थान के मंदिरों की विशेषताएँ

शिखर शैली: राजस्थान के मंदिरों में ऊँचे और अलंकृत शिखर होते हैं, जिनमें आमतौर पर लाटों (स्तंभों) का उपयोग किया जाता है। संरचनात्मक योजना: गर्भगृह, अंतराल, मंडप, और महामंडप का सुव्यवस्थित प्रयोग। उत्कीर्ण मूर्तिकला: देवी-देवताओं, अप्सराओं, गंधर्वों, और पौराणिक कथाओं के दृश्य प्रमुखता से उकेरे जाते हैं। भित्ति चित्र एवं सजावट: कुछ मंदिरों में रंगीन भित्ति चित्रों का भी प्रयोग किया गया है।

पानी की संरचनाएँ: राजस्थान के मंदिरों के पास अक्सर जल स्त्रोत, बावड़ियाँ, और कुंड बनाए जाते थे।

2.3 प्रमुख उदाहरण

दिलवाड़ा जैन मंदिर (माउंट आबू) – संगमरमर की उत्कृष्ट नक्काशी।

सास-बहू के मंदिर (नागदा उदयपुर) – नागर शैली के उत्कृष्ट उदाहरण।सोमेश्वर मंदिर (राजसमंद) – चंद्रवंशी राजाओं द्वारा निर्मित भव्य मंदिर।कैलाश मंदिर (अलवर) – नागर शैली की सुन्दर छवि प्रस्तुत करता हैं।

3. केराडू मंदिर का विशेष अध्ययन

3.1 परिचय

केराडू (Keradu) राजस्थान के बाड़मेर जिले में स्थित एक ऐतिहासिक नगर है, जो अपने प्राचीन मंदिरों और स्थापत्य कला के लिए प्रसिद्ध है। यहाँ स्थित शिव मंदिर, जिसे केराडू मंदिर के नाम से जाना जाता है, 11वीं-12वीं शताब्दी में निर्मित एक भव्य संरचना है।

3.2ऐतिहासिक संदर्भ

केराडू का उल्लेख 10वीं-12वीं शताब्दी के शिलालेखों और ग्रंथों में मिलता है।यह क्षेत्र प्रतिहारों, परमारों और बाद में चौहानों के शासनकाल में महत्वपूर्ण धार्मिक स्थल रहा।यहाँ के मंदिरों और स्थापत्य संरचनाओं को महमूद गजनवी और अलाउद्दीन खिलजी के आक्रमणों के दौरान काफी क्षति पहुँची थी।स्थानीय जनश्रुतियों के अनुसार, यह नगर कभी अत्यंत समृद्ध और सांस्कृतिक गतिविधियों का केंद्र था।

3.3स्थापत्य विशेषताएँ

नागर शैली का प्रभाव: केराडू मंदिर पूर्ण रूप से नागर शैली में निर्मित है, जिसकी विशेषता इसका ऊँचा शिखर और जटिल

मूर्तिकारी है।

- **मूर्तिकला:** मंदिर की दीवारों पर देवी-देवताओं, अप्सराओं, और पौराणिक गाथाओं से संबंधित उत्कृष्ट मूर्तियाँ उकेरी गई हैं।
- **स्तंभों की सुंदरता:** मंदिर के अंदरूनी और बाहरी हिस्सों में कलात्मक स्तंभों की सजावट देखने को मिलती है।केराडू की स्थापत्य कला राजस्थानी, गुर्जर-प्रतिहार और चालुक्य (सोलंकी) शैली का मिश्रण है।
- **संरचना:** गर्भगृह, अंतराल, महामंडप और प्रवेश द्वार में संतुलित योजना देखने को मिलती है।राजस्थानी स्थापत्य शैली का प्रभाव: मंदिर के निर्माण में स्थानीय शैली की झलक मिलती है, जिसमें पत्थरों की जटिल नक्काशी प्रमुख है।सोमेश्वर महादेव मंदिर यह मंदिर 10वीं-11वीं शताब्दी का माना जाता है और नागर शैली में निर्मित है।गर्भगृह में शिवलिंग स्थापित है और इसकी दीवारों पर सुंदर प्रतिमाएँ बनी हुई हैं।मंदिर का मंडप और प्रवेशद्वार अत्यंत आकर्षक और जटिल नक्काशी से युक्त है।
- विष्णु मंदिर यह मंदिर विष्णु के अवतारों को समर्पित है और यहाँ अति सुंदर नक्काशीदार मूर्तियाँ देखी जा सकती हैं।इसकी दीवारों पर महाभारत और रामायण की कथाएँ उकेरी गई हैं।
- जैन मंदिर इस क्षेत्र में जैन धर्म के प्रभाव के कारण कुछ जैन मंदिर भी निर्मित किए गए थे।इनमें से कई मंदिरों में उत्कृष्ट मूर्तिकला देखी जा सकती है, जो दिलवाड़ा मंदिरों से मेल खाती है।

मूर्तिकला और अलंकरण

केराडू के मंदिरों में अत्यधिक नक्काशीदार मूर्तियाँ पाई जाती हैं।यहाँ की मूर्तिकला में गुप्तकालीन और राजस्थानी प्रभाव देखा जा सकता है।प्रमुख विषयों में देवी-देवता, अप्सराएँ, मिथकीय जीव, कीर्तिमुख, और ज्यामितीय आकृतियाँ शामिल हैं।

मंदिर का ऐतिहासिक और धार्मिक महत्व केराडू मंदिर को 12वीं शताब्दी के परमार शासकों से जोड़ा जाता है। यह मंदिर शिव भक्ति का प्रमुख केंद्र रहा है और यहाँ हर साल विशेष धार्मिक आयोजन होते हैं। इस मंदिर की स्थापत्य शैली न केवल राजस्थान, बल्कि पूरे पश्चिमी भारत में अद्वितीय मानी जाती है। विध्वंस और पुनर्निर्माण इतिहास में केराडू मंदिर को विभिन्न आक्रमणों का सामना करना पड़ा। कहा जाता है कि यह मंदिर विदेशी आक्रमणों के दौरान आंशिक रूप से ध्वस्त हुआ था, किंतु आज भी इसकी भव्यता और शिल्पकला दर्शनीय है।

संरक्षण की आवश्यकता और सुझाव वर्तमान स्थिति

कई मंदिर अब खंडहर में बदल चुके हैं और उपेक्षित पड़े हैं।आधुनिक निर्माण और पर्यावरणीय क्षति के कारण स्थापत्य विरासत पर नकारात्मक प्रभाव पड़ा है।

संरक्षण के प्रयास

1. **सरकारी संरक्षण:** भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (ASI) को इन संरचनाओं को संरक्षित करने के लिए विशेष योजना बनानी चाहिए।
2. **स्थानीय जागरूकता:** ग्रामीणों और स्थानीय प्रशासन को इस धरोहर के प्रति जागरूक किया जाना चाहिए।
3. **पर्यटन को बढ़ावा:** यदि इस स्थल को एक पर्यटन केंद्र के रूप में विकसित किया जाए, तो संरक्षण के लिए आर्थिक सहायता प्राप्त हो सकती है।
4. **डॉक्यूमेंटेशन और रिसर्च:** मंदिरों की विस्तृत जानकारी और डिजिटल डॉक्यूमेंटेशन किया जाना चाहिए।

निष्कर्ष

राजस्थान के मंदिर स्थापत्य की विरासत अत्यंत समृद्ध है, जिसमें नागर शैली की प्रमुखता देखी जाती है। केराडू मंदिर इस स्थापत्य शैली का एक उत्कृष्ट उदाहरण है, जो राजस्थान के शिल्पकारों की उच्च कोटि की कला को दर्शाता है। इस शोध में हमने राजस्थान के मंदिरों की स्थापत्य विशेषताओं को समझा और केराडू मंदिर की अनूठी स्थापत्य शैली का विश्लेषण किया। यह मंदिर न केवल ऐतिहासिक दृष्टि से, बल्कि स्थापत्य और धार्मिक महत्व की दृष्टि से भी अत्यंत महत्वपूर्ण है।केराडू की स्थापत्य कला राजस्थान की सांस्कृतिक धरोहर का महत्वपूर्ण हिस्सा है। इसके मंदिर और मूर्तिकला न केवल धार्मिक महत्व

रखते हैं, बल्कि स्थापत्य कला की समृद्ध परंपरा को भी दर्शाते हैं। यदि उचित संरक्षण प्रयास किए जाएँ, तो यह स्थल आने वाली पीढ़ियों के लिए एक ऐतिहासिक धरोहर के रूप में सुरक्षित रह सकता है।

संदर्भ

1. भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (ASI) की रिपोर्ट्स
2. "राजस्थान की मंदिर वास्तुकला" – प्रो. आर. सी. अग्रवाल
3. "बाड़मेर का इतिहास" – डॉ. गोपीनाथ शर्मा
4. राजस्थान सरकार के पर्यटन एवं पुरातत्व विभाग की वेबसाइट
5. स्थानीय अभिलेखागार और मंदिरों से प्राप्त शिलालेख
6. "भारतीय स्थापत्य कला" – डॉ. वसंत शिंदे द्वारा भारतीय मंदिरों की वास्तुकला पर एक विश्लेषणात्मक अध्ययन।
7. नागर शैली के मंदिर" – पर्सी ब्राउन द्वारा भारतीय मंदिर स्थापत्य पर विस्तृत अध्ययन।
8. "बाड़मेर के ऐतिहासिक स्थल" – राजस्थान पुरातत्व एवं संग्रहालय विभाग द्वारा प्रकाशित विवरण।
9. "Keradu Temple and Its Architectural Significance" – ASI के वार्षिक रिपोर्ट में प्रकाशित विश्लेषण।